International Journal of Arts & Education Research

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रोत्साहन एवं संवेगात्मक बुद्धि में सम्बन्ध का अध्ययन

लोकेश कुमार शर्मा*[1], डा. सुशील कुमार[1]

[1]शोधकर्ता, सी.एम.जे.वि.वि. शिलांग

प्रस्तावना

व्यक्ति के 'सर्वांगीण विकास' पर उसके पारिवारिक वातावरण तथा उसके मानसिक गुणों जैसे मानसिक योग्य, अभियोग्यता, संवेग आदि का गहरा प्रभाव पड़ता है। सभी व्यक्ति व्यवहारिक दृष्टि से समान नहीं होते है। व्यपक रूप से उनमें व्यक्तिगत विभिन्नओं के पीछे कारण रूप में उनके शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास में भिन्नताएँ होती है। व्यक्ति के व्यवहार जैसे संवेगात्मक बुद्वि का समग्र प्रभाव पड़ता है।

1.1 संवेगात्मक बुद्वि

संवेगात्मक बुद्वि को निम्न तीन रूपों मे समझा जा सकता है।

संवेगात्मक बोध संवेगात्मक बोध अपने स्वयं के तथा एवं दूसरों के संवेगों को सही ढंग से पहचानने तथा उनके बारे में निर्णय करने की योग्यता है। इस प्रकार से यह ईमानदारी तथा बेईमानी के संवेगों के बीव विभेदीकरण करने की योग्यता है।

संवेगात्मक व्यवस्था संवेगात्मक व्यवस्था अपने स्वयं के तथा दूसरों के संवेगों को नियंत्रित करने, तीव्रता से परिवर्तित करने तथा दिशा निर्देशन करने की योग्यता है।

संवेगात्मक ज्ञान संवेगात्मक ज्ञान से तात्पय्र संवेगों को समझने तथा अपने संवेगों से सम्बन्धित सूचनाओ को उपयोग में लाने की योग्यता है।

इस प्रकार से संवेगात्मक बुद्वि एक प्रकार की योग्यता है जो दूसरों के संवेगों को समझने तथा अपने संवेगों को नियंत्रित करने में सहायक है।

पारिवारिक प्रोत्साहन

प्रोत्साहन किसी व्यक्ति को कोई कार्य करने के लिए या किए गए कार्य हेतु दी गयी सकरात्मक स्वीकृति या पुनर्बलन को कहा जाता है। अर्थात् यदि किसी को इस प्रकार के भाव दर्शाये जायें जिनसे व्यक्ति को स्वीकृति अथवा पुनर्बल प्राप्त होता है तथा उस कार्य को करने अथवा अधिक कुशलता से करते रहने को जो भाव प्राप्त होते है, उसे ही प्रोत्साहन कहते है। जब बालकों को इस प्रकार के भाव अपने अभिभवकों से प्राप्त होते है। बालक कुछ करने अथवा अच्छी तरह करते रहने को प्रेरित होता है तो इस प्रकार के भाव या प्रोत्साहन को पारिवारिक प्रोत्साहन की संज्ञा दी जाती है।

परिवार के विभिन्न रूप हो सकते है-

- बालकों के कार्यो में सहायता द्वारा।
- बालकों के विभिन्न क्रियाओं में प्रतिभागिता के लिए स्वीकृति देना।

- बालकों की सफलता पर प्रशंसा करना, कभी शब्दों के माध्यम से कभी पुरस्कार के माध्यम से।
- बालकों के निर्णयों का समर्थन करना।
- असफल होने पर उनको पुनः प्रयास करने को प्रेरित करना।
- बालकों के गृह कार्य में सहायता करना तथा निर्देश देना।
- बालक की असफलताओं के कारणों को जानकर उन्हें दूर करने के उपाय करना।

बालक का गृह समायोजन चिंता, सुरक्षा, भावना, तनाव, पर्याप्तता का भाव आदि पर उनके पारिवारिक प्रोत्साहन का महत्पूर्ण प्रभाव पड़ता है।

सम्बन्धित साहित्य

गोरदन;1983द्ध रैवर बार-ओन;1985द्ध मनाल भीमा;1988द्ध नाडू अभिसामरा;2000द्धउपाध्याय प्रतीक ;2001द्ध रूपा, सुनीता,खोबाराज;2002द्ध बिहारी बंसी, पाथान युनिस;2004द्ध गुप्ता रश्मि;2006द्ध

मोहन्ती इपसिटा और देविल जेमा ;2007द्धमंगल एस.केण् ;2007द्ध मेनवेल मारटिनेज,जोशीआशा;2001द्ध झोउ वाई0;2004द्धण्

अध्ययन के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रोत्साहन का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थीयों के संवेगात्मक बुद्वि का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रोत्साहन एवं संवेगात्मक बुद्वि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।-

''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रोत्साहन एवं संवेगात्मक बुद्वि में कोई सम्बन्ध नही है''।

शोध अध्ययन की विधि

शोध अध्ययन हेतु ''विवरणात्मक सर्वेक्षण पद्वति'' का प्रयोग किया जायेगा। शोधकर्ता ने न्यादर्श में चुने गये विद्यालयों में जाकर परीक्षण (उपकरणों) को प्रशासित किया तथा प्राप्त आँकड़ों के आधार पर इन दोनों चरों के प्राप्तांकों के मध्य सह-सम्बन्ध ;तद्ध ज्ञात कर उसका अध्ययन किया जायेगा।

न्यायदर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में बहुस्तरीय साधारण यादृच्छिक विधि का प्रयोग कर न्यादर्श का चयन किया जायेगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य में विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु बहुस्तरीय साधारण यादृच्छिक विधि का प्रयोग कर कुल 100 इकाईयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

ज्ंइसम टंसनमे व ि ब्वमीपिबपमदज व ि ब्वततमसंजपवद

क्रमसं0	विद्यालय	विद्यार्थियों की संख्या
1.	एस.डी.इण्टर कॉलेज, मेरठ	25
2.	कृपाराम इण्टर कॉलेज, मेरठ	25
3.	राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ	25
4.	सर्वहितकारी कन्या इण्टर कॉलेज, मेरठ	25
योग		**100**

प्रदत्तों का एकत्रीकरण

उपकरणों को प्रकाशित करने के लिए शोधकर्ता ने न्यादर्श हेतु चुने गये विद्यालयों के प्राचार्यो की सहायता से विद्यार्थियों से सम्पर्क स्थापित किया। सर्वप्रथम अग्रवाल पारिवारिक प्रोत्साहन मापनी व फिर मंगल संवेगात्मक बुद्वि अनुसूची छात्रों को दिया गया। परीक्षण पूर्ण होने पर उनसे परीक्षण वापस ले लिए गए है। अतः उनकी अंकन प्रक्रिया पूर्व निर्धारित है। इसी प्रक्रिया द्वारा अंकन किया गया तथा प्राप्तांकों को सारणीकृत किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

1. मध्यमान 2. प्रमाणिक विचलन

3. कार्ल पिर्यसन सह- सम्बन्ध

तथ्यों की व्याख्या एवं विश्लेषणः

उद्देश्य-1

''माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रोत्साहन का अध्ययन करना ''।

प्राप्तांकों के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले गये है-

100 में से 7 विद्यार्थियों में पारिवारिक प्रोत्साहन अति उच्च स्तर का है, 14 विद्यार्थियों का उच्च स्तर, 59 विद्यार्थियों का औसत स्तर का 10 विद्यार्थियों का निम्न स्तर का एंव 9 विद्यार्थियों का अति निम्न स्तर का है। इन प्राप्तांकों का मध्यमान 65.02 ज्ञात हुआ है। अतः स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के अधिकार विद्यार्थियों को औसत स्तर का परिवारिक प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

उद्देश्य-2

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्वि का अध्ययन। प्राप्तांकों के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले गये है-

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

100 में से 2 विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्वि बहुत अच्छी ज्ञात हुई। इसी प्रकार 100 में से 22 विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्वि अच्छी, 59 विद्यार्थियों की औसत, 11 विद्यार्थियों की खराब 6 विद्यार्थियों की बहुत खराब पायी गयी है।

इन प्राप्तांकों का मध्यमान 17.55 ज्ञात हुआ है जिससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अधिकतर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्वि साधारण स्तर की है।

उद्देश्य-3

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रोत्साहन तथा संवेगात्मक बुद्वि में सम्बन्ध का अध्ययन।

इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कार्ल पीयरसन सह सम्बन्ध गुणांक ;तद्ध की गणना की गयी है जिसके मान के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले गये है-

(1) पारिवारिक प्रोत्साहन तथा अन्तः वैयक्तिक जागरूकता संवेगात्मक बुद्वि में सह सम्बन्ध धनात्मक तथा सामन्य श्रेणी ;त त्र0ण्70द्ध का ज्ञात हुआ है। जिससे स्पष्ट है कि जिन विद्यार्थियों को पारिवारिक प्रोत्साहन अधिक मिलता है उनमें स्वयं के संवेगों को जानने सम्बन्धी संवेगात्मक बुद्वि का विकास भी धनात्मक होता है।

(2) इसी प्रकार पारिवारिक प्रोत्साहन व अन्तर वैयक्तिक जागरूकता संवेगात्मक बुद्वि में सह सम्बन्ध गुणांक का मान ;त त्र0ण्65द्ध प्राप्त हुआ हैं जिससे स्पष्ट है कि पारिवारिक सदैव अन्यों के संवेगों के विषय में जानकारी रखने सम्बन्धी संवेगात्मक बुद्वि के विकास में सहयोगी होता है।

(3) पारिवारिक प्रोत्साहन व अन्तः वैयक्तिक प्रबन्धन संवेगात्मक बुद्वि में सह सम्बन्ध गुणांक ;त त्र0ण्65द्ध धनात्मक व सामान्य स्तर का ज्ञात हुआ है। जिससे स्पष्ट है कि पारिवारिक प्रोत्साहन बालकों में स्वयं के संवेगों का प्रबन्धन करने सम्बन्धी संवेगात्मक बुद्वि के विकास में सहायक होता है।

(4) पारिवारिक प्रोत्साहन व अन्तर वैयक्तिक सम्बन्धन संवेगात्मक बुद्वि में सह सम्बन्ध गुणांक ;त त्र0ण्73द्ध पाया गया है। जिससे निष्कर्ष निकाला गया है कि पारिवारिक प्रोत्साहन का दिया जाना विद्यार्थियों में अन्यों के संवेगों का प्रबन्धन करने सम्बन्धी संवेगात्मक का दिया जाना विद्यार्थियों में अन्यों के संवेगों का प्रबन्धन करने संम्बन्धी संवेगात्मक बुद्वि का विकास करता है।

(5) पारिवारिक प्रोत्साहन व संवेगात्मक बुद्वि में यह सम्बन्ध गुणांक की मात्राा ;त त्र0ण्85द्ध ज्ञात हुई है अर्थात पारिवारिक प्रोत्साहन व संवेगात्मक बुद्वि में धनात्मक उच्च सह सम्बन्ध पाया गया है। इससे स्पष्ट है कि पारिवारिक प्रोत्साहन का धनात्मक, उच्च व समान दिशा में बालकों की संवेगात्मक बुद्वि पर पड़ता है तथा सवेंगात्मक बुद्वि के विकास में सहायक होता है।

शून्य परिकल्पना का परीक्षण

ज्ञात सह सम्बन्ध गुणांक मान ;त त्र0ण्85द्ध की तुलना कि 98 पर दो विभिन्न सार्थकता स्तरों 0ण्05 व 0ण्01(जिनका मान 1ण्95 व 2ण्54 है) से करने पर त का मान अधिक पाया गया। जिससे हमारे शोध की शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गयी है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होने के कारण हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रोत्साहन तथा संवेगात्मक बुद्वि में सार्थक सम्बन्ध है।

निष्कर्ष

शोध परिणाम दर्शाता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रोत्साहन तथा संवेगात्मक तथा संवेगात्मक बुद्वि में

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

सार्थक व धनात्मक उच्च कोटि का सह सम्बन्ध पाया गया है। जिसका अर्थ है कि जिन विद्यार्थियों को उच्च पारिवारिक प्रोत्साहन प्राप्त होता है उनमें उच्च संवेगात्मक बुद्धि विद्यमान होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बेस्ट, जे0 डब्लयू0 (1977), "शिक्षा में अनुसंधान" इंग्ललवुड क्लीफस एन0 जे0 प्रैन्टिस हॉल।
2. भार्गव, महेश और अरोड़ा सरोज अभिभावकों के व्यावहार के मूल सिद्धान्त आगरा, एच0पी0भार्गव बुक हाऊस।
3. भटनागर, एस0 "शिक्षा अनुसंधान" मेरठ, इण्टरनेशनल पबिलिशिंग हाऊस पृ0- 51।
4. चौहान, एस0एस0 (2000) "नवीनतम् शिक्षा मनोविज्ञान" नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा0 लि0, पृ0-317-330।
5. ढुल, इन्दिरा और मंगल, शुभ्रा (2005) संवेगात्मक बुद्धि-विद्यालय अध्यापक के लिये शिक्षा प्रक्रिया का महत्त्व नई दिल्ली कमल पब्लिकेशन प्रा0 लि0 पृ0 सं0 -14 ।
6. डॉ0 पाचौरी गिरीश, रीतू पाचौरी (2008) "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक का महत्त्व" मेरठ, आर0 लाल0 बुक डिपो, पृ0-5।
7. डॉ0 शर्मा आर0 ए0 "शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार" मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, पृ0-358।
8. गुप्ता, रश्मि (2006) "माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि की वैज्ञानिक प्रक्रिया का अध्ययन" , 'जरनल ऑफ एजुकेशन स्टडीज' वॉल(1)।
9. जोशी, आशा (2001), "कक्षा कक्ष के नैतिक मूल्यः नियंत्राण, रचनात्मक क्रियाएं एवं अभिभावक प्रोत्साहन" इण्डियन जरनल ऑफ साइकोमैट्रिक एण्ड एजुकेशन, वॉल- 32 (2) पृ0- 83-86।

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.